



शक्तिदात्रथरु॥ जाकिरुकाय॥ नागपूजाया
 ना. न. उ. ह. वि. भ. म. म. म.
 म. म. म. न. ॥ न. तिथि. ७. १०॥ प्र. व. न. ॥
 तिथि. १. ८. १०॥ १३॥ १५. वा. व. ॥ न. म. म. म.
 १३॥ वा. न. १ ॥ ह. म. ॥ ॥ तिथि. १०. १५
 वा. न.

दवपावनः दिन ६० तिथि ५५

उ. १. ना. म. ह. वि.

न. न. ध. म. म. ॥ म.

तिथि. ५. १०. १५

वा. न. १. ५. ६. न. न.

१. ३. ६. १२

वा.

को. का. दाय॥ र. सिध. न. दाय॥ र. कि. वा. इ. का. य॥

कृ. ती. का. पृ. ध. ॥ भ. स. नि. भ. न. न. द.

म. हि. नि. ७. ७॥ न. म. न. वि. सा. वा. दा.

स्वा. ति. १॥ तिथि. ॥ म. वा. तिथि. ३॥

१॥ २॥ ७॥ ७॥ १०॥ १३॥ १५॥

१०॥ १॥ वा. स. ॥ वा. न. ॥ ७॥ २॥ ७॥

१॥ ३॥ ७॥ न. हि. म. न. ७. ७॥

ल. ला. वि. ता. ७. ल. म. न. स. त. ति. ध.

न. व. ति. ॥ तिथि. १॥ २॥ ७॥ ७॥ ध. न. जा. ति.

प्रतिपदा नडा मि पूर्व वृक्षायनी ॐ बुद्धदेवता
 सिंगांगहेवव अनिश्वर काव पूजा ॥ १ ॥ पंचमि
 थादसि दक्रि (ह) वाताही कपाव हेवव रुर्मदेवता
 वृहस्पतिवान पूजा काव ॥ २ ॥ पश्चिम दवि ॐ बु
 पनि नूरुगहेवव वनलगाजा वष्टमी वयुदसि न
 गमन पूजा काव ॥ ३ ॥ उरुन नूडायनी श्वरुहेवव
 पीन कूयनदेवता द्विगिया दग मि काव ॥ ४ ॥
 एवाव पृ ६ गाति न ॥ काव ॥ ५ ॥ २ ॥ ६ ॥ मि
 ७ वा मि ॥ ८ ॥ ला न महा ल मि ॥ ९ ॥ विष न हेवव
 १० पुजा दिन काव या नी

२० नमः श्रीवलीकायै ॥ नृप नृपमायी का
 वीलसिखन ॥ ॥ सासका विधि स्तुपना धून
 काडा श्रीसूर्यार्घ्य गुण्यादाय पंचगवी ॥ १ ॥
 धन धन पूजा हा न संकल्प ॥ काव ॥ २ ॥ नमूक
 नाम ॥ रुस्यः नरुगृह नामना ॥ प्रसन्न कासः ॥
 गमि प्रगदाय गनिदाय नडाग्रहादि क्रु प्रयावदा
 यथाय ॥ नरुह किन प्रग गनिश्वर क्रु प्रयावदा
 यस्काना न यथाय कामनार्थ ॥ न इय निगृह ॥ किन्या
 दिनानादाय जानापद्रवादि ॥ किर्ध पूर्वक नाग
 ॥ १ ॥ क रुयस कलपी जानिवाव ॥ २ ॥ नमूना नाह
 ३ ॥ दिमना रिपिन कामनाया ॥ ४ ॥ रुह रुस हृदयार्थ

भाग्यमयं न पत्रमयं न व्री. नृदहं वव. नृदमा
 हकाशीत्यर्थ. उदनमयं प्रतमर्हि. अनिश्वन क
 उद्यानादि. नडावल्लार्चन. नृदकनामवलितय
 धा. पूष्यानीहनपूजाकर्तु. नृदपूष्यालनसंक
 लययामहं. **धनधययाय** ॥ **॥ रगवसमयस**
त्वविद्यानाज्ञानमामुग ॥ कर्तुमिच्छामिहं नार्थ. प्र
 तिष्ठां च दयामम. गिष्यानां मनस्कयाय. यमा
 कं पूजनाय च. नमवरगतस्य रगवप्रभारकर्तु
 मर्हति ॥ यथा हि सर्वसंबुद्धा दुषितवृत्तसंस्ति
 तामाया देव्या यथा कृको. नृदगिष्टति नृहा क
 तो. खवाफा सर्वसंबुद्धा वाधिसत्ताय सर्वदा

नृदसमयसत्त्वहिसानिधुमर्हति ॥ **धनज**
प ॥ **धनधयन** ॥ ॥ नृदमहादेवी ध्याय ह
 गवतीगीवा. नृदचामिकनालं च विंशुक्ताटिसम
 पूष्याभाषी नार्हकृत्तलीलीमाधिनद्रां च नृहासिनी
 : किनिमिक्तुलक्ष्मि. कयूननापूषाः नत्तमोसा
 विविद्यागीहासमोलावसंविनि ॥ नृदादमरुज
 कां कादिव्यवस्तुद्रुषिताः खद्रवानानुथावजं
 वज्रां रुग्णधवावना ॥ उमनृदलया प्रचदक्रिहिन
 विष्ठाविनाः सद्रकंधनृहस्तावगजहस्तावलाः
 हिता ॥ पाशकृत्तिहस्ताय खत्वाद्रकं मया गकं
 वित्पूष्यामथ सिद्धिसिंहासनापनिस्तिता ॥
 नृदादमरुहादेवी. रगवती विद्यावयत् ॥ उग्रव

दाप्रचडाचवडाप्रचन्द्रनायकाः यडाचंद्रवर्ग
 चैवचन्द्रवर्गानिचलि॥ नअमचाप्रचडाचमध्य
 चाग्निप्रगन्विताः शीतनानूगकृष्णनीलाशुः
 कायधुरिका॥ पीतापाशूसाहयं शालिटा
 स्कारुहकिताः सहिरवासनरूपमानुषिनर
 नवमूर्किका॥ कृत्वाव्याकृतदूर्जानववर्ग
 उग्रवन्दारिकाक्रमारः चवंध्यासामहादवीर
 गवतीवर्गकुम्भ॥ ॥ श्री. पा. पू॥ रुरुटवती
 कायनमः स्वाहा॥ रुरुटप्रवअयनमः स्वाहा॥
 रुरुटवअग्रयनमः स्वाहा॥ रुरुटवअनाय

नमः स्वाहा॥ रुरुटवअयेनमः स्वाहा॥ रुरुटव
 अवधेनमः स्वाहा॥ रुरुटवअनूपायनमः स्वाहा
 रुरुटमूर्तिवअयनमः स्वाहा॥ रुरुटवतीका
 येनमः स्वाहा॥ ॥ पू. ग. श. ॥ ॥ तुं मानूगावर्ग
 संकार्गस्वरुटकविन्दुकः कामनूपीमहादवी
 उग्रवअनमस्तु॥ स. ध. म. जं॥ धनचुक्रम
 अल. नहस्य. विसमाधि ग. म. स. मा. र. था. पि.
 स्वाग्रपूजा॥ ॥ अनवलिपूजा॥ कायः॥ धूपः
 धनकिमडा॥ ॥ तुं मानूगावर्गसुकार्ग. स्वप्ररु
 टकविंदुकं. कामनूपीमहादवी. उग्रवअनमस्तु
 ॥ ॥ म. ध. स॥ धनमययानमय॥ तुं की. श्री. रुरु

मघाय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥
 श्रुतय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥
 श्रुतय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥
 श्रुतय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥ श्रुतय स्वाहा ॥
 ॥ पू-मा-या ॥ ॥ ॐ मानुगावन्सुसंकासं रवप्ररु
 टक विन्दुधक. कामदूयीमहादेवीसिगुवभुनम
 सुत ॥ बलि ॥ ॐ किं नीवं किं मूकसंकासं. धानदू
 ट्टरयावहं. उद्धकं विन्दुयाक. कवपावंहहदू
 दनः. प्रक्षिपति पति गृह २ दह २ पच २ खखः
 रवादि. महाविष्णु रववदूयं. बलि. यति. गृह २
 की २ ईरुट स्वाहा ॥ अधमा ॥ १ ॥ पनपूर्वव

लोह

क्रयनीपूजा ॥ पीन ॥ किमरु ॥ सुनापापंधुनवन्द
 प्रकस्यकविदुकं. वक्रायावाहयदवीध्यानपूर्व
 नमस्तुत ॥ मध्यमान ॥ ॐ श्रीहो किंपनययागविष्ण
 नागय २ ईरुट स्वाहा ॥ धूपकं कर्म ॥ ॐ वक्रायनीस
 ह्यानि. वक्रायाकं. श्रुतय २ श्रीधुं क २ ईरुट स्वा
 हा ॥ ध्यान ॥ ॥ ॐ वक्रायनीपीनवन्सिगुवक
 मूखाहंसासनी. बहुसंकेपुल्लहिता. मल्लसकायी
 विन्दुपापंधुनवदूयं. श्रुतय २ कर्म. धूपकं
 हंसासनसिगु. श्रीपनम्यधनी वक्रायनीरावयदू
 ॥ श्री. पा. पू ॥ रुट वक्रायनीयईरुट स्वाहा ॥
 वक्रायनीकीयईरुट स्वाहा ॥ वक्रवधुं रवमईरुट

हाहा॥ हंसाभनिचक्रं रुट् स्वाहा॥ ॐ प्रयोगक
 प्रयोगायाय रुट् स्वाहा॥ वायुकीनागवाजाय रु
 रुट् स्वाहा॥ नागकमवक्राय रुट् स्वाहा॥ रु
 रुट् स्वाहा॥ नागकमवक्राय रुट् स्वाहा॥ वज्रग्रहण
 सम्भन्धनाय रुट् स्वाहा॥ प्रदियमानायामिय स्वा
 हा॥ नाहिनी नृगमिसा भ्राद्राय नमः स्वाहाः॥
 अदिष्टवानाय स्वाहा॥ पू. का. वा॥ ॐ वक्राय नी
 पूर्वपीतामहाकाववीरुसंवा॥ स्वायुधविन्दु
 पामुंयः नमस्तु हंसवाहिनी॥ ॥ वली॥ ॐ नृ
 काववीरुसंजानेः पूर्ववक्राय नीयः रुट् रुट् न
 नसर्वसत्त्वानाये नृगमिसा विन्दु नृ २०० देवली स्व
 स्वस्वाहि २ वक्राय नी देवीय रुट् रुट् स्वाहा ॥ ॐ वा॥

धनउरुनसमाहं ववी पूजा॥ विन्दु॥ ॐ नमः श्री
 नाहं ववी देवीय नमः॥ ॐ महापूर्वकया संवधः
 ना नस्य नमिग्न ननं नोडान्वा वाहय देवी ध्यान पूः
 प्यं नमस्तु ग॥ मवामान॥ ॐ श्री श्री हं हं कालागिनी
 क्रयविप्रनाभय रुट् रुट् स्वाहा॥ धूपकपूज॥ ॐ क
 नोडाय नी देवी नृडयाक नृवतन २ गी पुं क नृ रुट्
 रुट् स्वाहा॥ ध्यान॥ ॐ नाहं ववी स्य नव नृ स हय
 वाहिनी वतु रुट् रुट् धनीः नृ स नृ गाय विन्दु पायं य
 नृ पन नृ जाया वज्र विग्न नृ धनी पन नृ व ववीः
 नाहं ववी रावयं ग॥ ॥ नृ का. पू॥ रुट् रुट् नृ
 डान्वा नीय नम स्वाहा॥ दिव्य नृ पी नीय नम स्वाहा॥

रुद्रकोमायीयस्वाहा ॥ नकुवर्धयस्वाहा ॥
 युनवाहनायस्वाहा ॥ मक्तिगामलधनायस्वाहा ॥
 महापाशधनायस्वाहा ॥ नत्वद्वयववायस्वाहा ॥
 काठरुववायस्वाहा ॥ मन्त्रपाशधनायस्वाहा ॥
 मस्वयालनागनाजायस्वाहा ॥ नृदगन्धिनदी
 नाजायस्वाहा ॥ गन्धमानयधनायस्वाहा ॥ कल
 रुद्रकायनमस्वाहा ॥ नत्वप्ररावेद्यायनमस्वा
 हा ॥ कर्णपासिदायस्वाहा ॥ काकर्मगनादिय
 नायस्वाहा ॥ नृदहासायस्वाहा ॥ पंचदशक
 पासायस्वाहा ॥ मृतीयात्रकादसीयस्वाहा ॥
 मद्यापूर्वहालुगि उग्रहालुधीयस्वाहा ॥ नृ
 गानवाभायस्वाहा ॥ ॥ पू मा पु ॥ रुद्रकोमायी

नकुवर्धना नकानवीजसर्गवा ॥ स्वायधावि
 पाशवनमरुमयूनवाहिनी ॥ ॥ नलि ॥ रुद्र
 रुद्रकोमायीममलवसयनां शासय २ नानय २
 वन्ध २ मयूनासनीदवीप्रनियत्यरुद्रदेवलिगृ
 रुद्ररुद्ररुद्रस्वाहा ॥ मधुनी ॥ ४ ॥ मयूमेत्य
 विष्णुवीपूजा ॥ ॥ नलि ॥ रुद्रगजवक्रधर्मव
 दविष्णुपाशधनसदाः वेदवावाहयदवीध
 नपूष्यनमरु ॥ मयवाना ॥ रुद्रकीप्रीद्वय
 निरुप्रविष्णुनागायद्रुद्रस्वाहा ॥ धूमनी ॥
 रुद्रविष्णुविविष्णुलाकसहयागिनी नृवगव २

श्रीधुंकरं रुद्रं रुद्रं स्वाहा ॥ ॥ ध्यान ॥ वेङ्कटी स्वामि
 बल्लभ गजगनि. एकमुख विठ्ठल. चतुर्भुज
 मायाविन्द्याय नमः. नमस्तुभ्योः. गणेशाय नमः
 नमो. वेङ्कटी देव्यै नमः ॥ श्री. वा. पू. ॥ रुद्र
 रुद्रविष्णु देव्यै नमस्तु ॥ विष्णु गङ्गाय नमः
 स्वाहा ॥ उदित्यै नमः स्वाहा ॥ गजगनी
 य स्वाहा ॥ विवस्वत नवाय स्वाहा ॥ कलिक
 नाय नमस्तु स्वाहा ॥ क्रौञ्च नवाय स्वाहा ॥
 रुद्राय नमस्तु स्वाहा ॥ नारायणाय नमस्तु
 स्वाहा ॥ प्रकाशाय नमस्तु स्वाहा ॥ हनुमत् नमः
 स्वाहा ॥ हनुमत् नमस्तु स्वाहा ॥

श्रीवक्रसंज्ञाय स्वाहा ॥ वसुधा. दारणीय
 स्वाहा ॥ हस्ताय स्वाहा ॥ स्वाति स्वाहा ॥ वृ
 ष्णाय स्वाहा ॥ ॥ श्री. वा. पू. ॥ उदित्यै नमः
 मने नमस्तु कानवीरुवा. स्वायुष्यविन्द्याय
 नमस्तु गजगनी ॥ ॥ वसि ॥ उदित्यै नमः
 श्रीगजगनी प्रणियमनमस्तु सर्वगं नमस्तु
 श्रीधुंकरं रुद्रं रुद्रं स्वाहा ॥ यधर्मा ॥ नितिविष्णु
 पूजा ॥ ५ ॥ अथ दक्षिणायामपूजा ॥ किमहं न क
 ॥ उदित्यै नमस्तु स्वाहा ॥ नमस्तु स्वाहा ॥
 नमस्तु स्वाहा ॥ नमस्तु स्वाहा ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ ह्रीं श्रीं हं कालाग्निविष्णुविद्युतासह
कंठरुहाहा ॥ धृष ॥ ॐ वावाहीरुगनाक
वनवत्पार्श्वकद्वंद्वरुट्याहा ॥ ॥ ॥ ॥
ॐ वावाहीनकाववाहमेवेदनसत्रिणः ॥
कमरवाधिनश्री वनुर्मुकाधनीमूलरुगाया
विन्दुपाशैव अपनरुगायांस्वप्ररुटकधम
विनीमहीखाननास्केता ॥ ॥ ॥ ॥
रुटवावाहीदवीनमः स्वाहा ॥ विमयवन्दुर
नवाय स्वाहा ॥ कपालरुनवाय स्वाहा ॥ ॐ का
लत्रिपीय स्वाहा ॥ ॐ महीयासनीय स्वाहा ॥

उत्तमरेनवाय स्वाहा ॥ यमनागनाजाय स्वाहा
कमरवनाय स्वाहा ॥ उर्वधाययवताय स्वाहा ॥
मीननाथाय स्वाहा ॥ वृत्तहकाय स्वाहा ॥ रुद्रप्र
णदीनामाय स्वाहा ॥ कलकरीषस्मभना
यद्वंद्वरुट्याहा ॥ नकास्यक्रमपायाय स्वाहा ॥ सि
धियासिवाय स्वाहा ॥ सूनप्रलवेयाव स्वाहा
पथे मिथ्यादगीय स्वाहा ॥ विभारदाठाश्रु
नाठाश्रुयाय स्वाहा ॥ हहस्यमिवानाय स्वाहा ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ वावाहीयाम्यनकाहानकान
वीरसंरुवाः स्वायुधविन्दुपाशैः नमस्कृतः
हीवाहनी ॥ ॥ बलि ॥ ॐ वावाहीयतद्यानरु

हा॥ श्रीगणेशाय नमः॥ नमो भगवते वासुदेवाय॥
 स्वाहा॥ नमो भगवते वासुदेवाय॥ पंचनिबन्धुर्ह्यसि
 यस्वाहा॥ शुक्रवासाय स्वाहा॥ नमो भगवते वासुदेवाय॥
 आयसीष्टुष्टीनाशायकायवीजसंखाः स्वाहा
 अविन्द्याय नमः शुक्रवाहिनी॥ स्वाहा॥
 यकायवीजसंखाः आयसीमहादेवी सकल
 पवित्राय सहीमं देवसि गृह्ण २ मुं २ पीव २
 जगमानस्य सर्वविघ्नहन २ दह २ ध्वज २ रुं २
 रुं २ स्वाहा॥ यथा॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः॥
 ॥ ॐ नमः श्रीगणेशाय॥ दिगम्बर॥ ॐ व्याघ्रचर्म
 कटिवर्धनं खड्गहस्तकविमूर्कं वामद्वारहस्त

वीरानपूर्यनमस्तुते ॥ मध्यमान ॥ ॐ श्रीग्रीहं
 हः देवीकाटकयविघ्ननामयहंरुटस्वाहा ॥
 ॐ यथा मूडाकं कायनूपदवी ॥ भूवमनर
 भा ॥ घुंरुनरुंरुटस्वाहा ॥ ॥ देवीकाटिकः
 वायुका ॥ यथा कासवयी ॥ ॐ उन्नविंशक
 पालन ॥ कलुवंगालनसह ॥ कासययु रेनव
 न ॥ नूनकनागसंशत ॥ उइन्वसहक ॥ नगुग्री
 पर्वतग ॥ धेवव ॥ हयानकला ॥ नयालांधक
 सहिकं ॥ सुवर्णप्रसवेययूक ॥ सिद्धननावि
 धनव ॥ ॐ यथा मूडानकवर्णित ॥ कवांगी
 प्रतापती ॥ पिंगला ॥ धिकगी ॥ वकमूखा ॥ रघुर्

[illegible]

यन् स्वप्नयनमुधाय्यन् स्वाहा वयन् ॥ अ वा
 ॥ पू ॥ ॐ दक्षिणधियन् स्वाहा ॥ प्रमाधीयन् स्वाहा
 कृष्णवर्ण्यस्वाहा ॥ कमदनुधनाय स्वाहा ॥ धान
 धनाय स्वाहा ॥ सर्वप्रमाधीयन् स्वाहा ॥ अगतिदाः
 षड्दनाय स्वाहा ॥ सर्वमानप्रतरयप्रसम्नाय
 स्वाहा ॥ पू. वा. ३ ॥ ॐ कृष्णवर्ण महावीरं वेङ्कटेश्वरं
 लक्षणं नरकनिपातधनं देवकन्मनाङ्गनमास्तुते ॥
 नम्यते ॥ वलि ॥ ॐ दक्षिणधियन् प्रमाधीयन् सर्व
 यद्वत्त्वन्मगतिविजयान्तिथिः ॥ द्वादशवलिगृह्ये स्व
 स्वाहा ॥ ॐ ॥ अर्कं कृत्वा स्वाहा ॥ ॥ ॐ ॥ अर्कं कृत्वा
 नमस्त्वन्मगतिविजयान्तिथिः ॥ ॥ ॐ ॥ अर्कं कृत्वा

भृगुतिथः सखावनिगुनुईरुटस्वाहा ॥ १००४ ॥
 एगवनसर्वविद्यामाईरुटस्वाहा ॥ १००५ ॥
 कलसृगायस्वाहा ॥ भृगुस्वाहा ॥ मानासहक
 र्हास्वाहा ॥ सर्वप्रगवईरुटस्वाहा ॥ वन्धुवर्ग
 कलसृः ईरुटस्वाहा ॥ भृगागदुईरुटस्वाहा
 ॥ गगप्रमिपीजयईरुटस्वाहा ॥ भृगिदग्धाव
 नहगायईरुटस्वाहा ॥ सिधुव्याधुगायस्वाहा
 भृगायनायईरुटस्वाहा ॥ भृगववसनिईरुट
 पायः भृगुप्रमपिभृगायईरुटस्वाहा ॥ भृगवव
 प्रगनाकगगायईरुटस्वाहा ॥ भृगववसईरुट
 भृगानिगगायईरुटस्वाहा ॥ भृगववसईरुट

पितृणां वीधनाय ईंरुट्स्वाहा ॥ यदृव (गमृनाय
व. मादृव (गवयमृता गुदृवसृगववधृवईंरु
ट्स्वाहा ॥ अमगरीयहाताहागयईंरुट्स्वाहा
नृना ॥ उं मूदृ २ महां मूदृ सर्वदृगर्तृविमाव
नसृगनिद्राकय वि (गोधनमाकायनथागताया
ईंरुसम्यक् वृद्धाय नमः ॥ (गोधय २ वि (गोध
य २ सर्वकर्मवनदा वि (गोधनियईंरुट्स्वाहा ॥ न
हामृत्सृमहाधालासृह्वावेगवनीनदीः सृह्वा
सयचमनिसृगंवृद्धप्रशमामिहं ॥ त्रिलयाभिर्य क
त्येव प्रतदवासृननमा उतीर्तृवकांगानंनंप्र
मंप्रशमामिहं ॥ वृत्ति ॥ उं दक्षि (सर्वप्रताधीपदृ

यत्सर्वोन्नीष्टमृगतिरयपीजाप्रभातिर्धनं वाचः
 प्रमयवनी नावका न प्रमयनाभाय रुकनामस्य
 नायूनावाहने स्वयं शुभं संरुलप्राफर्थ सर्वपुन
 रयनिवाननाथं वंदं वसिष्ठं २ वृत्तमृतिताद
 नमयं वसिष्ठं धीनमत्स्यमानसदक्षिदृग्धमदकसस
 हिमन भृगुशाय गच्छहादववाहितपुनम्कानाक
 नप्राफकामनाथं वंदं वसिष्ठं २ वृत्तं २ खखखा
 हिंरुं रुद्राहा ॥ वन्दे ॥ ॐ ॥ धनं कर्म पुन
 नाहि नृय ॥ किमह ॥ ॥ ॐ श्रीब्रह्मसूक्तं नमः
 दवधिपिष्टमानवा ॥ यकचित्सावायवंमयोदहन
 मायनः स्तुतिनायाकुसर्वसकृप्यतत्त्वार्चदियका

स्थितिवस्तुनादनप्रमयनस्यमहात्कवं रुवापि
 नविद्यमं नानाप्रममिसादवागयानिसमीमकय
 तिर्थमक्रादिमृनस्तिनं द्वादिगन्धदाधनं लीपुन
 ननामिह ॥ न ॥ ॐ ॥ धनं कर्म वसिष्ठं लसाकर्मपू
 जा ॥ जाप ॥ ध ॥ ध्यान ॥ ॐ निमग्नं नवायः ॐ विनिर्
 किनाकनयनमूर्खिकाकुसुवंक्षमिमंकनगृहान
 सव्यः नमस्तुवाहादिनीश्रीश्रीहं ध्यानपूष्यनमस्तु
 न ॥ पूनकिन नमानिनाकप्रवभृगुठदाहनध
 सोनाष्टदत्तमृद्वं ननिधवायध्यानपूष्यनमस्तु
 न ॥ नमान ॥ ॐ श्रीश्रीहं हवनाग्निदिग्गुनाभा
 वरुं रुद्राहा ॥ धूप ॥ ॐ ननिधवायसहयाग्नि

न्यालोनाष्टसाकैश्वर्यवतनरुद्रस्ताहा॥ धनगा
 प॥ कुंभनिष्ठनायकस्तुद्रस्ताहा॥ २१ ॥ निरामना
 न्या॥ रुद्रवर्षुहप्रमास्यधनं वरुगुरुधनं :
 विभूतवाना॥ गृधवाहनंलोनाष्टदंष्ट्रप्रवः का
 म्भयलोपयुक्तयागहंसंरुद्रं नवांभनिमूर्तिराव
 यहा॥ २२ ॥ कुंभनिष्ठनायकस्तुद्रस्ताहा॥ रु
 द्रवर्षुहस्ताहा॥ आदिशुपूजायस्ताहा॥ वरुगुरु
 जायस्ताहा॥ विभूतवानधनायस्ताहा॥
 गृधवाहनायस्ताहा॥ लोनाष्टदंष्ट्रप्रवायस्ता
 हा॥ मृष्टम्याजायायस्ताहा॥ महिभीनक्रयाय
 स्ताहा॥ काम्भयपूजायस्ताहा॥ ॥ पू. वा. २० ॥

हीन्दनीलनूचिनायकित्वाभमूर्ति कल्यानवाकनयी
 मनुसैमनूयकम्भः॥ लोनाष्टदंष्ट्रप्रवर्षुहस्ता
 नीलकविभनकदम्भनववद्यराकि॥ २३ ॥ कुं
 रुद्रवर्षुभनिष्ठनायकस्तुद्रदंष्ट्रमुसायनायकादनमृ
 यवलिगुद्रस्तुद्ररुद्रजिघृष्यपीवरुपानंममसर्व
 सत्यानायेदुःखादयसर्वविष्टाहनरुद्रं रुद्रं रुद्र
 स्ताहा॥ ॥ धनरुद्रमाननंमूर्चविजः मृष्टादि॥ ॥
 कुंभनिष्ठनायकित्वाहिमृष्टाया लोनाष्टदंष्ट्रप्र
 वायः मृष्टम्याजायायमाहिभीनक्रयाय काम्भय
 ग्वयाय गुरुजायाय लोपीरुद्रस्यप्रजायतिदव
 नाय मृष्टाया रुद्रावाय सूर्यपूजाय रुद्रयागह

संरगायः प्रमिदमिदविषसंरगायः जमलायायः
 श्रीसुदवतायः नीलवागपूष्यगन्धेयहोपविगधिः
 गायः कूर्मवधसमानूठायः देवदानवगंधर्वकूल
 सुसुहीतायः श्रवतनरुगवंमनूष्यानां हिमार्थय
 रूदमद्रतपूष्यधूपवसिगृह्णतां नमस्तुभ्यस्य श्री
 यमंतस्य प्रीतिकनो गुणकि कुरु पूष्टि कुरु कुरुमा
 नस्य श्रायूनानां हे स्वर्ग्यमना हि सिमकाननार्थं
 निरवकाय श्रुर्धुपतिष्ठस्वाहा ॥ ॥ श्रीगुरुजा ॥ मर्ध ॥
 ईं ॥ ॥ धनं नृणां वसिष्ठं ॥ किमदं ॥ नमो विः
 भूतहेनवायः विविकिनाकनूर्यं तमेनाष्टदंता हवा
 यध्वानपूर्यं नमस्तुभ्यं ॥ मध्यमान ॥ श्रीगुरुहंसा

नाष्टविष्णुनाम्भयशंकरदत्ताहा ॥ पूषा ॥ नीमाहेनवा
 यमवतनरणीपुंशंकरदत्ताहा ॥ अना ॥ कुंविनिश्
 किराकनूपायमृषिकानुसुमं ॥ अनिमकनभीम
 नकसव्यः क्रकतवमाहादिनिष्ठाविशंभानपूष्यन
 मस्तुत ॥ अ. पा. पू ॥ निमाहेनवायनमस्ताहा ॥ कि
 लिक्किलायस्ताहा ॥ कित्रिकिविनाकनूपायस्ताहा ॥
 उक्किष्टविष्णुविनाम्भयस्ताहा ॥ कूनरव्यगानीयस्ताहा
 महावनीयस्ताहा ॥ अवाहनीयस्ताहा ॥ महाभ्राजा
 हनीयस्ताहा ॥ उक्किष्टहेनवादितकनपवीवानस्तान
 मस्ताहा ॥ पूषा ॥ पु ॥ अयमर्थः ॥ बलि ॥ दिग्गपुदिः
 ग्मवायूविपमिवउदियनहाविक्रयकवि. क्राउना

ग्रहवसि॥ सूर्यसाममहीवृषवृषदवगुनरुतु
 मनिग्रहमाद्रककुनानादिदेवना. नागयक्र
 गन्धर्वसुनगमूकिंनव. महाभगादिरीः सहआ
 गच्छागच्छ. वृंदसर्वसिद्धकंदसि. गृह्णरत्नद्वय
 पिवरमसत्त्वानांनकाकूर्वकुं. आहंरुट्ठाहा॥
 वंदनमायसि॥ ॐ नमः प्रणिसना. साहज्यमध
 नीमहामाय. श्रीगवती. मन्त्रानुस्तान्नीविद्याभी
 पतिवृंदसर्वसिद्धमंडादननयवदनिगृह्णरत्न
 यरपिवकुवलिकान्भीजिप्रमुधूपैः नसर्व
 सत्त्वानांवमायूयावाहकृत्. सर्वरत्नपिमाया
 दय. पीठाहनरदहृरत्नसंभूतसर्वसाहंरुट्ठः

स्वाहा॥ वृषवृषवसि॥ ॐ नमः श्रीलक्ष्मणा
 यक्रमसिद्धिगहनद्वय. वन्दकात्मिसिद्धि
 य. खर्चपूष्टकयगहगाय. गृह्णरत्नद्वय
 रुट्ठाहा॥ वृषवृषवसि॥ वृषवृषकयूनपमस
 मविधसुनवती. स्वसेन्यपनिधानसहिगायक
 नूरवृंदवसिगृह्णरत्नद्वयसैन्यशूनकमूयन. उह
 वक्षरत्नकन ॐ आहंरुट्ठाहा॥ उग्रवसि॥
 ॐ नमोऽय्यु. ययमृत्तनाभय. दीर्घायकामना
 वनाहंरुट्ठाहा॥ गृह्णरत्नद्वयवसि॥ ॐ मृत्तना
 यवनाय. नानकावमृत्तनाभय. मृदुदं
 लिगृह्णरत्नद्वयहा॥ सार्वभौमवसि॥ ॐ नमः

मानसूय विरुदमूय एतमूय
उरुदमूय काकमूय गृधमूय
मानसूय भूतमूय सुतमूय
भवतूय सप्तमीयानसूय
यश्रुतसूय संयुक्तमूय रश्मिदरमूय
विसृतासूय केकमागमूय सुखयनसूय
शरुदमूय ॥ कृतासूय ॥ विरुदमूय
दलीकामनीयमूय वलीगृधमूय
स्थाहा ॥ ॥ धनद ॥ वृषावपुत्रा ॥
भानलिरुदमूय ॥ पद्मवर्णमूय ॥ दीपक
रूपमूय सुययमि ॥ मरुतमूय न्याक ॥
मयक्रीडकमूय ॥ ॥ सुभूमन

विधुनगाकनूय हव हित्वा इमं हित्वा
रुदावगिमवाप्रया ॥ ॥ हृदयमूय मूयपु
नांश्रुतादासनन पूनममनविशम ॥ सुखाव
मिगकृत्वा हा ॥ कडाकसपनमशाकिमका
उपूय ॥ मर्वनधूनकाडा उरुमागनदान ॥ ॥
यधनामवपुनी उरुमागनदान संप्रदायया
मि ॥ मितपूजा ॥ कर्पूयक ॥ ॥ हृदय
कमूयकमूय ॥ ॥ ॥ नमः श्रावकसत्वाप
यदकासनासर्वजंगसिद्धाः साक्षात् रूपन
नाकापूनायनगंधर्वसिद्धाः ॥ ग्रहजानत
यः यकपिहमानिववसनिदिव ॥ ॥ न
सकमानूय विवीमनहकनां कलिदिवया

विष्णुनामस्तोत्रः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

वलिनैव शनं वा ॥ ११ ॥ गृहं गृहं नु रं गृहं पी वरु
 यदं निद वरु न स रु स र ग रु ॥ १२ ॥ एक ह न
 म न वा य र्ग न क द न नु य र्ग न म य प म वि प थ
 क्रु य र्ग न्या ग म न वि (म) व गः स ग न न स र ग म रः
 म्या मा गं ग म नु वि स्य य ग ॥ १३ ॥ हृ प्र नृ द म ह
 नृ द द व द रु स मा स गः हृ प्र क न म र हिरु ह न
 डा गि न वि न य का ॥ वामू दि धा नी हिरु हृ प्र
 मा द वी पु रं र वा ॥ १४ ॥ ग य व वि र य व वः
 मृ गि ना म य म र्गि ना ए ड का नी न ह का नी व
 ल का सि रु या गी नीः वृं द्री व श्री धा नी इ री न
 व कि धि द स्य व वी ॥ १५ ॥ का वा जि का
 रि य धा ग्रेः क पा ल मा ल मा ली न्या र व र

याम ह र्दिका ॥ १६ ॥ र व प्र ह स्ता प न धु ह स्ता
 व र ह स्ता ध नृ ग थ ॥ प व डा कि नी म हा न र स
 र्क म्मी न सा धे क ॥ १७ ॥ या ग म नु म हा नीः
 गीः व र ग्रे वी श्रा ह्ना म्वा वा ह नं वि र म ज गः
 ॥ उं रं क र्क ध नः वं र वं ध न ए र र्का द नः दानः
 प्र मि र्ग र्ग मा न स म लि क र्कः या वि र्क र्क र्क र्क
 रु ट र स्वा हा ॥ वृ नि व लि ग थ ॥ स - ध - म
 य ॥ ध न लि र्क र्क सा ध ना नि मा ल स कृ ण य
 मा प धू य प व स य प द धी व व व नं ॥ ध न ली
 वा क पू जा व गु वा स ॥ ल स्य मं नु ल द नः
 कि व ल मि द ॥ १८ ॥ उं न म ग्री व श्री का य
 ॥ उं र र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क

निघात्रः सं ३ संज्ञानकुदं चूलिगचूलिगः ५
 ग्रीष्मप्रवः ५ः ३ कात्रनादपि स्रुतानपि
 वज्रपात्रवसं ग्रा मविनः पं ३ पापनाहिरुग
 वनिवनदातिष्ठिवन्दनमस्तु ॥ १ ॥ वं वं वं वं
 मुदृष्टवकिगवकिगः ववेत्वा इग्निनष्टः
 इ ३ कामनूपप्रहासितवदनः खड्गपाशा मन्त्र
 किः दं ३ दं ३ पानिउमवदिमीदिमः दिनिमा
 लाग्रमंगः ३ ३ गानिनकं यकुविजयमः
 सिद्धिवः ५ नमस्तु ॥ २ ॥ वं ३ धावदूयपूच
 लिगचूलिगः घघनावावधार्यः हां ३ हासन
 पपिरुतानधविगः खवनं कृष्णपातः रं ३
 गनासकलजनहिने गस्यदहविगमः

कालनादेसकसहयहनः सिद्धिवन्दनम
 स्तु ॥ ३ ॥ वं ३ व्यामधात्रुमसिखवननः ना
 लपागात्रमस्तु ॥ कं ३ कालघात्रधकिमिध
 किगः यस्यहस्तं विग्नः इ ३ इग्नयूपग्रमनि
 रवननं गद्यदवस्वदूयः मं ३ मं ३ सिद्धिस्त
 कसहयहनः सिद्धिवः ५ नमस्तु ॥ ४ ॥ ३
 कालसद्येप्रहासितमहमा वामहस्तकपात्रं
 खं ३ खद्वंगहस्तं उमवदिसिदिमः मनुमाः
 नाहृत्पात्रा ॥ कं ३ कुरुनीयः हं ३ हसिगहाः
 सिर्ग्रीमनादः आयकमस्तु सिद्धिरुगव
 सिवनदः सिद्धिवः ५ नमस्तु ॥ ५ ॥ इ ३ का

सिकालवृषीनवपि. सिगमूखि. सोडवोडा
 भिजिक्का॥ कं३ कालिघाननादपवयज्जनिः
 सिसकालविगंभयगाहि. प्रकमानासि
 यात. वृत्३ वृत्३ कामिनीक. नृक. नृः कं३ कालि
 कलवापीरुमवमीववदसिद्धिवलुनमस्त
 ॥ ७ ॥ न३ नावववोडवृ३ धीवमूखि. दीर्घ
 जिह्वाकलाल॥ प३ ३ नृपसमयविज
 यमं. सुहृदं गानिसूर. सूरसग्रासवीनः
 ७ ३ ययिजयमं. नृपिहातवक. कं३ ३ का
 लनादरुगवनीववद. सिद्धिवलुनमस्त
 ॥ ७ ॥ म३ काववृष३ ममिजनमना. जव

नील

मालाग्रमस्त॥ कं३ कालधारीपूजनीगधः
 त्रिगं. धूधुमावीकूमावी॥ धृ३ धुमव. नृग्रम
 निस्रवनकं. कालघातपीमूनी. न३ ३ जिडाव
 पममरयहृद. सिद्धिवलुनमस्त॥ ८ ॥ न३ ३
 नृदवृद्ध. नृ३ धिवनूखि. दिर्घजिह्वाकनाव. कं
 ३ ३ नृवृष. समवविजयम. सूरदकंदिनीरु
 ॥ ८ ॥ सूरसंग्रामवीनकयतिविजयम. सिद्धि
 वलुनमस्त॥ ९ ॥ ॥ नृमिपुत्रीकालव॥ ॥
 कं३ काववृष. हन३ सकलं हनवनालहृद. कं
 ३ ३ म३ ३ दमदिमनधिसंकालनृपारिमन
 प्रमोहनेपिगम. येः उयमनगितदा. नृयनाक
 मनाल. कं३ ३ नृ३ ३ ममरयहृद. प्रागुव.

कृष्णपाद॥ १ ॥ ये श्री श्री हसरु ह३ हसिम
 धिबुनरुसुमरु पीयांगी हसमा मूटुमनी
 मनीयममूडनिर्घाग घागेइ हनिपमिनवर
 वसध्व वृक्षवंद सुवन्दः सर्वह सर्वमय वि
 रुवधनमिन वृक्षमवनमरुग ॥ २ ॥ ज्ञां किं
 कीमानसुहवरयहनही सर्वरावविराव ॥
 निर्मरुसुकिमार्गवप्रवरासन सामसूर्या
 मिनमरुः नमरुसुवमरु अयनपनपन हा
 नमार्गप्रधान विनयप्रवन्द अरुसुसु
 कसु ग्रामाहवदीनमरु ॥ ३ ॥ वि३ विरुह
 कवविवववदकि डी३ द३ मूडकी धीहान
 रानिदान अनहननिवद सुकिमकिप्रदान ॥

हं३ साविधन वव२ गरुनसिद्धिद वाममा
 र्ग ॥ ज्ञां किं हंयं कसाध ककिरविघ्नविनय
 पुनमरु ॥ ४ ॥ हमाकायाददः खंसमिगरव
 रयं सर्वविघ्नककायः अं विप्रं धप्रं ग मर
 गद्यपमिगम सिद्धिसर्वाधदायः ॥ ५ ॥ मूडा
 गजाकंगसपवनगम गीसुगानेकदर्क ॥ ६ ॥
 डी३ रं गं सदिनदमखधवविघ्ननाशन
 मरु ॥ ७ ॥ अं प्रो३ डी३ कमानि कहरमधि
 न ककीयाननूकायः मूडासंलगिमिरीम कूर
 रसगगग्रामगगुहगुम ॥ वमागसिद्धिना
 थ मनवरनवम मरुअसुप्रदान ॥ ८ ॥ का
 कवाधीमथ सवनमिरुदेवदो मूडकानमरु

॥ ७ ॥ ओं विं वं वे क्वी दहन कृत्त गन्तुं सुक
 कथान वस्तु कि वा नयू क हनि क की व (६)
 अरु सि यव्य वः सुदनी काम नाग हन २ क
 वाम गन्तु क न नागः नृ नृ तु (६) सुगन्तु सु
 २३। ऐत गुप्ता गुफन मरु ॥ ७ ॥ ओं धिं धुं
 का सु तु (६) च ३ घटि न घ घ्या घु धायः ओं
 किं कंद क धिं न ४ न न म त र्व ह्य न य ध्यान ॥
 शुद्धि व क सु न ग युग २ युग न विनि न का ल
 मरु सु की (६) न क धान म द २ म क न व ज तु
 नृ न मरु ॥ ८ ॥ ओं धिं धुं सु म लान नृ ग ४ ग
 ग र्हा तु क्त्वा नि सु म ड व जा धु व ज ह रु सु

वज्र हस्त २

वय नि व न द म ग मा गी ग नृ कः सु ग क मि धि
 दा म ल ४ ल लि न पा ग जी ल सु द नी काम न
 ध वि ध म वि ध ग म ०० डि मा गी न मरु ॥ ९ ॥
 धि ग क्ति न क क गी कि लि २ ग न वे ता ड म डी
 रु मा (६) नृ मां सी का ट न क न व धि लि न व न
 मो ड नो डा मि थो ड ०३ का ल ना द नृ न २ नृ न
 न धा न धा नां ३ हा स द वी सु ध न मरु ह नि
 ह न न मि न धा म नि क न मरु ॥ १० ॥ ०३ का
 ल ना द र व र २ र व र ४ र व र्ति मा सी नृ मा सी
 क क्त्वा र्थ स स सी ४ ४ ४ ४ न स र्व र कि प्र म
 न्यः ०३ हं गान्ति क र्म नृ न र व र नी रा धि नी
 व स भू डः धी र्ध र्था ध कानां र व र ४ ह न तां

ॐ नमोऽंशाप्रतिस्नानार्थे ॥ स्वरावशुद्धा ॥ ४ ॥
 इति शुभ्यतानेन वज्रपञ्चनसूत्रपनिकूट
 ज्ञानमथ विष्णुवज्रवदी स्थितविष्णुद्वन्द्व
 कात्रनिष्ठा त्राहणवर्तिः महाप्रतिस्नानार्थे
 कूपणमनुलापीतसितसर्वधर्मा स्वराव
 शुद्धाहं ॥ शुभ्यतानेन वज्र स्वरावलाकाहं ॥
 ततोऽन ॥ नीलत्रकचगुर्मस्वादाव ॥
 सुयोत्रसूक्तचक्रवर्जगत्रस्वप्रवदनमूलावि
 ज्ञाः वामे वज्रवज्रपाणिनिर्लधनू ८ पशुभि
 स्वधरावेत्यालं कृतजिनस्कासुतपर्यकस्थि
 ता ॥ श्रीमतिद्विष्टावयत् ॥ पूर्वदिशि महासा

हसुप्रमंदिनीः स्वयं महामंशानूसा निष्ठाः पृ
 ष्ठमहाभक्तिवतीः आमे महामायत्रीः द्वितीय
 पटः आर्जुन्यादिकाः षष्ठः काली काराग्री
 कालकन्धीवतालीः प्रताविचिगाहनहाम्ब
 गाः तत्रमकुटिन्यः प्रतिमुखं विनेता ८ पूर्वा
 दिक्कान्तविष्णुमङ्गलसूर्यध्वः वज्राकुशावजापा
 णीः वज्रहारावजावजापद्मावजावजाव
 लीलावलीवृताणवयम् ॥ जायः धूपः आ
 र्क्षेनः पुष्पः न्यासः ॥ त्र्यम्बकः श्रीमन् ॥ श्री ३
 पञ्चनक्तदेवदवी हजताली कायपादाव
 ॥ ४ ॥ नार्थप्रतिकुलाहा ४५ धर्मी धूनजानापा

Handwritten text in a medieval script, likely Latin, on a parchment leaf. The text is arranged in four lines, with some characters appearing to be in a different script or dialect. The parchment is heavily stained and discolored.

Handwritten text in a medieval script, likely Latin, on a parchment leaf. The text is arranged in two columns, with the left column containing a large initial 'S' and the right column containing the number '102'. The parchment is heavily stained and discolored.